RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-07
July-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

# राजनीति सिद्धान्त की अवधारणाः सामान्य विश्लेषण

Dr. Irsad Ali Khan

*Associate Professor, Political Science, Government Bangur College, Didwana*

**ARTICLE DETAILS**

**Article History**
*Published Online:* 15 July 2019

**Keywords**
*राजनीतिक, सिद्धान्त, राज्य।*

**ABSTRACT**

*बुनियादी तौर पर राजनीतिक सिद्धान्त का संबंध दार्शनिक तथा आनुभविक दोनों दृष्टियों से राज्य की संघटना से है। राज्य तथा राजनीतिक संस्थाओं के बारे में स्पष्टीकरण देने, उनका वर्णन करने और उनके संबंध में श्रेष्ट सुझाव देने की कोशिश की जाती है। निःसेदह, नैतिक दार्शनिक प्रयोजन का अध्ययन तो उसमें अंतर्निहित रहता ही है। राजनीतिक चिंतक वाइन्सटाईन ने गागर में सागर भरते हुए कहा है कि राजनीतिक सिद्धान्त मुख्यतः एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें प्रश्न पूछे जाते है, उन प्रश्नों के उत्तरों का विकास किया जाता है और मानव के सार्वजनिक जीवन के संबंध में काल्पनिक परिप्रेक्ष्यों की रचना की जाती है। इतिहास के पूरे दौर में राजनीतिक सिद्धान्त इन प्रश्नों का उत्तर देता रहा है।*

**शोध विस्तार–** यह दो शब्द राजनीति और सिद्धान्त से मिलकर बना है। अतः राजनीति सिद्धान्त को समझने के लिए हमें राजनीति शब्द का अर्थ जानना आवश्यक है। राजनीति के लिए प्रयोग किया जाने वाला अंग्रेजी शब्द पौलिटिक्स की उत्पत्ति ग्रीक भाषा के शब्दों नगर–राज्य, शासन एवं संविधान से हुई है। धीरे–धीरे राज्यों के स्वरूप से परिवर्तन आने लगा और उनके आकार एवं कार्य बदलने लगे। परिणाम स्वरूप इस विषय के प्रति भी लोगों की धारणाओं में परिवर्तन आने लगा। वे इसे विस्तृत दृष्टिकोण से देखने एवं सोचने लगे।

राजनीतिशास्त्र उतना ही प्राचीन है जितना की राज्य। राज्य के अस्तित्व में आते ही लोगों ने राज्य के विभिन्न पहलुओं पर सोचना आरम्भ कर दिया। इस प्रकार राजनीति का विकास हुआ। राज्य से संबंधित ज्ञान का व्यवस्थित रूप हमें सर्वप्रथम प्राचीन यूनान में मिलता है। ग्रीक में छोटे–छोटे नगर राज्य होते थे जो स्वतंत्र रूप ये संगठित होते थे। ग्रीक विद्वानों ने राजनीति शब्द का प्रयोग राज्य से संबंधित कला के रूप में किया।[1]

राजनीतिक सिद्धान्त में ''सिद्धान्त'' शब्द अंग्रेजी शब्द थ्योरी से बना है। थ्योरी शब्द की उत्पत्ति यूनानी शब्द थ्योरिया से हुई है, जिसका अर्थ है–''समझने का विशिष्ट दृष्टिकोण''। दूसरे शब्दों में यदि देखा जाये तो राजनीतिक सिद्धान्त ज्ञान की वह शाखा है, जो राजनीति के अध्ययन का सामान्य ढ़ाँचा प्रस्तुत करती है। राजनीति का संबंध मनुष्य के सार्वजनिक जीवन से है। राजनीतिक सिद्धान्त के अन्तर्गत किसी घटना को तार्किक विवेचन द्वारा व्याख्या करते हुए उसे स्पष्ट कर ''सामान्यीकरण'' करने का प्रयास किया जाता है। इस प्रकार राजनीतिक सिद्धान्त का अभिप्राय राजनीति और उससे संबंधित समस्याओं का विभिन्न तथ्यों के आधार पर व्याख्या प्रस्तुत करने से है। राजनीति सिद्धान्त के अन्तर्गत राजनीति के भिन्न–भिन्न पक्षों का अध्ययन किया जाता है।[2]

समाज की सारी संस्थाओं में केवल राजनीतिक प्रबंध ऐसा विषय है जिसका संबंध संपूर्ण मानव समुदाय से है। अतः राजनीतिक प्रबंध के अन्तर्गत समाज के सारे सदस्यों के ऊपर सत्ता का प्रयोग किया जाता है, सबके लिए नियम बनाये जाते है और निर्णय किए जाते है। ये नियम और निर्णय हम सबके जीवन को दूर–दूर तक प्रभावित करते है। ऐसे निर्णय किस प्रक्रिया का परिणाम होते है, और इस प्रक्रिया में किन तात्विक नियमों का पालन होना चाहिए। यह राजनीति सिद्धान्त की मुख्य समस्या है। सेबाईन ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक ''राजनीतिक सिद्धान्त का इतिहास'' एवं डनिंग ने अपनी पुस्तक ''राजनीतिक सिद्धान्तों का इतिहास के अन्तर्गत प्राचीन काल से आधुनिक काल तक के राजनीतिक विचारों के इतिहास पर प्रकाश डाला है।[3]

संक्षिप्त रूप से कहा जा सकता है कि ''सिद्धान्त'' का अर्थ है–तर्कपूर्ण ढंग से संचित और विश्लेषित ज्ञान का समूह। राजनीति का संबंध बहुत सी चीजों से है, जिनमें व्यक्तियों, समुहों तथा वर्गों और राज्य के बीच के संबंध और नौकरशाही, न्यायपालिका आदि जैसी राज्य की संस्थाऐं शामिल है।

डेविड हेल्ड ने राजनीतिक सिद्धान्त को परिभाषा देने हुए कहा है कि ''राजनीतिक सिद्धान्त राजनीतिक जीवन के बारे में ऐसी अवधारणाओं और सामान्यीकरणों का ताना बाना है। जिनका संबंध सरकार, राज्य और समाज के स्वरूप, प्रयोजन और मुख्य विशेषताओं से तथा मानव प्राणियों की राजनीतिक क्षमताओं से संबंधित विचारों, मान्यताओं एवं अभिकथनों से है।''[4]

प्रसिद्ध राजनीतिक लेखक एंड्रयू हैकर ने राजनीतिक सिद्धान्त के बारे में कहा है कि ''राजनीतिक सिद्धान्त एक ओर अच्छे राज्य और अच्छे समाज के सिद्धान्तों की तटस्थ तलाश और दूसरी तरफ राजनीतिक तथा सामाजिक यथार्थ की तटस्थ खोज का संयोग है।''[5]

राजनीतिक सिद्धान्त के अन्तर्गत राजनीति के विभिन्न पक्षों का अध्ययन किया जाता है। राजनीति का संबंध मनुष्यों के सार्वजनिक जीवन से है। मानव सभ्यता के प्रारम्भ से ही उत्तम जीवन की तलाश (Good Life) एक महत्वपूर्ण एवं चिंता का विषय रहा है। व्यक्ति एक बौद्धिक प्राणी होता है। अतः उसमें अपने जीवन को उन्नत करने की हजारों संभावनाऐं पायी जाती

RRIJM 2015, All Rights Reserved

है। मनुष्य एकमात्र ऐसा प्राणी है जो अपने जीवन और अपने परिवेश को उन्नत करने के तरीके लगातार निकालता रहता है। इसके लिए समाज व्यवस्था का निर्माण होता है। परन्तु कोई भी समाज व्यवस्था सर्वगुण संपन्न नहीं होती है। इसलिए प्रचलित व्यवस्था की आलोचना शुरू हो जाती है, और नई व्यवस्था के निर्माण के सुझाव आने लगते है। इसी प्रक्रिया में कोई प्रतिभाशाली विचारक इस आलोचना और पुनःनिर्माण की योजना को अभिव्यक्तियां प्रदान करता है। ये सारी अभिव्यक्तियों राजनीति सिद्धान्त की परम्परा का निर्माण करती है। इस आधार पर राजनीति सिद्धान्त के तीन प्रमुख कृत्य स्वीकार किये गये है (1) वर्णन (2) समालोचना (3) पुनःनिर्माण। इनमें से वर्णन का कृत्य राजनीति विज्ञान के क्षेत्र में आता है, समालोचना और पुनःनिर्माण के कृत्य राजनीति दर्शन के क्षेत्र में आते है। अतः राजनीति सिद्धान्त के दो मुख्य अंग है। (1) राजनीति विज्ञान (2) राजनीति दर्शन। राजनीति सिद्धान्त को समझने के लिए इन दोनों अंगों के स्वरूप की जानकारी जरूरी है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि राजनीति का सम्पूर्ण ज्ञान विकसित करने में ये दोनों तत्व परस्पर पूरक की भूमिका निभाते है।[6]

राजनीति विज्ञान में आधुनिक उपागम का विकास द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद हुआ। परन्तु इसके संकेत हमें बीसवीं शताब्दी में देखने को मिलने लगे थे। सन् 1908 में ग्रैहम बैलेस ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक ''ह्मयूमन नेचर ईन पॉल्टिक्स'' तथा आर्थर बैंटली ने अपनी पुस्तक ''प्रोसेस ऑफ गवर्नमेंट में राजनीति की अनौपचारिक प्रक्रियाओं ;प्दवितउंस च्तवबमेमेद्ध पर प्रकाश डाला। इसमें राजनीतिक समस्याओं का विश्लेषण करते हुए मनोविज्ञान एवं समाज विज्ञान की जानकारी का लाभ उठाया गया। बैलेस ने मनोविज्ञान से प्रेरणा लेकर अपने अध्ययन में ''व्यक्ति के व्यवहार'' तथा बेंटली ने समाज विज्ञान से प्रेरणा लेकर ''समूहों के व्यवहार'' पर ध्यान केन्द्रित किया। राजनीति में आयी इस नवीन अनुभव मूलक पद्धति ने अनेक नवीन राजनीतिक संकल्पनाओं के विवेचन का रास्ता खोल दिया। इससे पहले भी उन्नीसवीं शताब्दी में राजनीति के अनुभव मूलक अध्ययन की दिशा में कुछ प्रयास हुए थे।[7]

बीसवीं शताब्दी के शुरू में ग्रैहम बैलेस ने व्यवहारिक राजनीति के अध्ययन में नए यर्थाथवाद की मांग की। समकालीन मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की सहायता से उसमें यह तर्क प्रस्तुत किया गया कि राजनीतिक व्यवहार के क्षेत्र में व्यक्ति विवेकशील प्राणी सिद्ध नहीं होता क्योंकि उसकी सारी गतिविधियां विवेक या आत्महित से प्रेरित नहीं होती। मानव प्रकृति बहुत जटिल है, अतः इसके बारे में पहले से ही कुछ मानकर चलना उपर्युक्त नहीं है।

बैलेस का कहना है कि मानव प्रकृति के बारे में कोई तथ्य बनाने से पहले उससे संबंधित तथ्यों और साक्ष्य की जांच की जानी चाहिए। इस मामले में गुण के बजाय परिमाण पर ध्यान देना चाहिए। अर्थात हमें यह नहीं मानना चाहिए कि मनुष्य स्वार्थी, लालची, परोपकारी या उदार होता है, बल्कि यह मालूम करना चाहिए कि वह कितना स्वार्थी, लालची, परोपकारी या उदार है ? अतः संक्षिप्त रूप से यही कहा जा सकता है कि राजनीतिक प्रक्रिया को समझने के लिए स्थितियों के आधार पर व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन किया जाना चाहिए। बैलेस के द्वारा दिये गये इन विचारों को तुरन्त तो स्वीकार नहीं किया गया बल्कि उनकी तीव्र आलोचना की गई। परन्तु आगे चलकर जब विभिन्न देशों में राजनीतिक उथल–पुथल के दौरान मनुष्यों के राजनीतिक व्यवहार के नए–नए और अनोखे अनुभव सामने आए, तब बैलेस के दृष्टिकोण को यथोचित महत्व दिया जाने लगा।

प्रारम्भ में आर्थर बेंटली के द्वारा दिये गये विचारों की आलोचना हुई, परन्तु बाद में उनके महत्व को स्वीकार कर लिया गया। उसने राजनीति विज्ञान में तथ्यों के संकलन मांग की थी। उनका मानना था कि ''राजनीति में समूहों के अध्ययन''[8] किया जाना चाहिए। उसने समाजविज्ञान से प्रेरणा लेकर अनौपचारिक समूहों के अध्ययन पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। इस तरह उसने राजनीतिक प्रक्रिया में दबाव समूहों, दलों, चुनावों और लोकमत की भूमिका पर विशेष बल दिया।

प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् राजनीति विज्ञान के क्षेत्र में नवीन लकनीकियों का प्रयोग एवं नवीन संकल्पनाऐं विकसित करने का कार्य अमेरीकी विचारकों ने संभाल लिया। राजनीतिक प्रक्रिया के अनुसंधान के लिए उन्होंने मनोविज्ञान तथा परिमाणन की अनुभवमूलक प्रविधियों का सहारा लिया। राजनीतिक शक्ति के विश्लेषण में राजनीति वैज्ञानिकों ने विशेष अभिरूचि दिखाई। चार्ल्स मेरियम एवं उनके शिष्य हेरल्ड लासबेल ने राजनीति विज्ञान को शक्ति का विज्ञान बताया और राजनीतिक अभिजन जैसी संकल्पनाओं का विस्तृत विवेचन किया। आधुनिक राजनीति विज्ञान के विकास के दौरान लालबेल तक आते–आते यूरोप में कई जगह उदार लोकतंत्रीय शासन का पतन हो चुका था और कम्यूनिष्ट तथा फासिस्ट प्रणालियां अस्तित्व में आ चुकी थी। इस प्रकार के राजनीतिक परिवर्तनों ने नवीन जिज्ञासा को जन्म दिया। वैसे राजनीतिक शक्ति का अध्ययन राजनीति विज्ञान के लिए नई बात नहीं थी क्योंकि हॉब्स एवं मैकियावली जैसे इस ओर पहले ही ध्यान दे चुके थे। परन्तु नवीन पद्धति में राजनीतिक शक्ति के सही–सही स्थान और परिमाण पर बल दिया गया था जिसने विभिन्न समुदायों में शक्ति के विन्यास के अध्ययन को प्रोत्साहन दिया।

संक्षिप्त रूप से यही कहा जा सकता है कि अनुभवमूलक पद्धति के समर्थकों ने राजनीति विज्ञान की पुरानी संकल्पनाओं, पद्धतियों, शब्दावली के स्थान पर नवीन संकल्पनाओं, नवीन पद्धतियों एवं शब्दावली को अपनाने पर ध्यान दिया।

राजनीति विज्ञान का परम्परागत दृष्टिकोण तर्क और कल्पना पर आधारित एक आदर्शात्मक अध्ययन है। इसमें नैतिकता और राजनीतिक मूल्यों को अध्ययन का आधार बनाया गया है। इसमें मूल्यों को अत्यधिक महत्व दिया गया। परम्परागत राजनीति विज्ञान का प्रारम्भ प्लेटो से होता है, जिसमें अपनी प्रसिद्ध कृति ''रिपब्लिक'' में आदर्श राज्य का चित्रण किया है। परम्परागत राजनीति सिद्धान्त के अन्तर्गत तर्क और कल्पना के आधार पर ऐसे आदर्श प्रस्तुत किये गये, जिनका राजनीतिक जीवन के यर्थाथ से कोई लेना देना नहीं था। परम्परागत राजनीति सिद्धान्त के विचारकों ने राज्य का उल्लेख एक नैतिक

संस्था के रूप में किया, जिसका उद्देश्य व्यक्ति को नैतिकता के मार्ग पर निरन्तर आगे बढ़ाना है। अतः संक्षिप्त रूप से यही कहा जा सकता है कि परम्परागत राज सिद्धान्त में मूल्यों पर अत्यधिक जोर दिया गया। परन्तु आधुनिक राजनीति वैज्ञानिक इससे सहमत नहीं थे, इसी आधार पर उन्होंने परम्परागत राजनीति विज्ञान को अस्वीकार कर दिया। उनका मानना था कि राजनीति विज्ञान को आधुनिक समाज उपयोगी एवं प्रासंगिक बनाने के लिए मूल्यों के बजाय तथ्यों को अध्ययन की ईकाई बनाना होगा, जिससे राजनीति विज्ञान को और अधिक वैज्ञानिक बनाया जा सके। परम्परागत एवं आधुनिक राजनीति सिद्धान्त के मध्य एक निश्चित समय रेखा तो नहीं खींची जा सकती परन्तु द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद के राजनीति विज्ञान को आधुनिक राजनीति विज्ञान के नाम से जाना जाता है।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद राजनीति विज्ञान में नवीन प्रवृत्तियों का आगमन हुआ, जिसे आधुनिक राजनीति विज्ञान के नाम से जाना गया। आधुनिक राजनीति विज्ञान अधिक व्यापक और यर्थाथवादी है। आधुनिक राजनीति विज्ञान की झलक हमें अरस्तु की संविधान विषयक धारणा में देखने को मिलती है। ऐसा माना जाता है कि अरस्तु ने अपनी संविधान विषयक धारणा का निर्माण करते समय आज से लगभग दो हजार वर्ष पूर्व 158 शासन प्रणालियों का तुलनात्मक अध्ययन किया था। अरस्तु ने इन संविधानों से संबंधित सूचनाओं का संग्रहण कर, विभिन्न प्रकार की सरकारों के कार्यों का विस्तार से वर्णन किया। इस संदर्भ में चार्ल्स हाइनेमन टिप्पणी करते हुए कहते है कि ''राजनीतिशास्त्र का क्षेत्र अब इतना व्यापक हो गया था कि उसमें संस्थात्मक संगठन, निर्णय–निर्माण और क्रियाशीलता की प्रक्रियाओं, नियन्त्रण की राजनीति, नीतियों और कार्यों तथा विधिबद्ध प्रशासन के मानवीय वातावरण को सम्मिलित किया जाने लगा''।[9]

आधुनिक दृष्टिकोण के द्वारा राजनीति विज्ञान को एक ऐसा व्यापक स्वरूप प्रदान करने की चेष्टा की गई है जिसमें राज्य को ही नहीं वरन् समाज को भी सम्मिलित किया जा सके। आधुनिक राजनीति के समर्थक विचारकों का मानना है कि राजनीतिक जीवन को सामाजिक जीवन के सन्दर्भ में ज्यादा अच्छे से समझा जा सकता है, अतः उनका कहना है कि राजनीतिक अध्ययन में ''अन्त अनुशासनात्मक दृष्टिकोण'' को अपनाया जाना चाहिए। आधुनिक राजनीतिक विचारक संरचनाओं के बजाय उन संरचनाओं में सम्पन्न होने वाली प्रक्रियाओं को अधिक महत्वपूर्ण मानते है। राजनीति विज्ञान का क्षेत्र अब राजनीतिक दर्शन की विवेचना और संस्थाओं के वितरण तक ही सीमित नहीं रह गया था। संस्थाओं और संगठनों के अध्ययनों में भी आनुभाविक शोध की प्रविधियों का प्रयोग अधिक तेजी से बढ़ने लगा। समकालीन राजनीतिक वैज्ञानिकों ने इस समस्या की खोज करना आरम्भ कर दी थी कि समाज में शक्ति के वास्तविक केन्द्र कहां है और उस शक्ति का प्रयोग किसके द्वारा किया जाता है। आधुनिक राजनीतिक विचारकों ने मूल्यों के बजाय तथ्यों को अपने अध्ययन का मुख्य आधार बनाया। समकालीन विचारकों का मानना था कि मूल्य निरेपक्ष अध्ययन द्वारा ही राजनीति विज्ञान को और अधिक वैज्ञानिक बनाया जा सकता है। समकालीन राजनीतिक विचारक धीरे–धीरे मूल्यों को छोड़कर तथ्यों की ओर बढ़ने लगे एवं अपने अध्ययन में उनको अत्यधिक महत्व देने लगे। समकालीन विचारक तथ्यों के वस्तुनिष्ठ अध्ययन के आधार पर अब वे वैज्ञानिक सामान्यीकरण की ओर बढ़ना चाहले थे।

**निष्कर्ष–** इसमें राजनीति विज्ञान में व्यापक और महान परिवर्तन हुए। राजनीति विज्ञान का स्वरूप तेजी से बदलने लगा। नई अवधारणाऐं, पद्धतियॉ और तकनीकी तेजी से विकसित होने लगी। राजनीतिक संस्था अब विश्लेषण और शोध की मूल ईकाई नहीं रह गई थी और अध्ययन का आधार राजनीतिक परिस्थितियों में व्यक्तियों के व्यवहार को माना जाने लगा था। कैटलिन, आर्थर बेण्टले, लासवेल, डेविड ईस्टन, पार्सन्स, मर्टन, शील्स और लेवी जैसे विचारक राजनीति विज्ञान को आधुनिक राजनीति विज्ञान मानने लगे। आधुनिक राजनीति विज्ञान में माननीय क्रियाओं, शक्ति, राजनीति व्यवस्था, निर्णय प्रक्रिया के अध्ययन को नवीन ईकाई के रूप में अपनाया गया।

## सन्दर्भ सूची


1. ओ.पी. गाबा : ''राजनीतिक सिद्धान्त की रूपरेखा'' नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2016, पृ. 3
2. डॉ. एस.सी. सिंहल : ''राजनीतिक सिद्धान्त'' लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, 2014, पृ. 2
3. एंड्रयू हैकर : ''पोलिटिकल थ्योरी'' मैकमिलन पब्लिकेशन, न्यूयॉर्क, 1961, पृ. 13
4. डेविड हेल्ड : ''मॉडल ऑफ डेमोक्रेसी'' कैम्ब्रिज पॉलिटी, 1996, पृ. 9
5. एंड्रयू हैकर : ''पोलिटिकल थ्योरी'' मैकमिलन पब्लिकेशन, न्यूयॉर्क, 1961, पृ. 14
6. ओ.पी. गाबा : ''राजनीतिक सिद्धान्त की रूपरेखा'' नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2016, पृ. 4
7. सी.बी. गेना : ''तुलनात्मक राजनीति'' विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2007, पृ. 13–15
8. एस.पी. वर्मा : ''आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त'' विकास पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1997, पृ. 6–7
9. उपर्युक्त, पृ. 11


RRIJM 2015, All Rights Reserved 